सिन्धु सभ्यता

विस्तार, व्यापार व सम्बन्ध एवं उत्पत्ति

विस्तार : सिन्धु सभ्यता का विस्तार अफगानिस्तान, ब्लुचिस्तान, पाकिस्तान तथा भारत में था। इसकी लम्बाई उत्तर से दक्षिण में 1400 कि0मी0 पूर्व में पश्चिम 1600 कि0मी0 थी।

इसका क्षेत्रफल लगभग 1299600 वर्ग किलो मी0 था। वह अपनी समकालीन मिश्र तथा मेसोपोटामिया से अधिक विस्तृत थी। अब तक इस उप महाद्वीप में हडप्पा संस्कृति के लगभग 1000 स्थलों का पता लग चुका है।

उत्तरी अफगानिस्तान में : मुंडीगाक एवं सोर्तगुई पुरा स्थलों की खोज की गयी है।

ब्लूचिस्तान में अबर सागर के तट पर स्थित सुरकागेन्जेर एक महत्वपूर्ण स्थल था। बाल्माकोह, सुरकाकोह भी ब्लुचिस्तान में थे।

पाकिस्तान : में खोजे गये सैंधव सभ्यता के पुरास्थलों में हड़प्पा मोहनजोदडो, चन्हूदडो, क्रोटदीजी, आमरी, रहमानखेणा आदि मुख्य है।

भारत के पंजाब प्रांत में रोपड़, कोटला, आदि मुख्य हैं। हरियाणा में बनवाली, मिलाथल, सिसबल, वारा आदि मुख्य है।

जम्मू कश्मीर – मांडा
राजस्थान – कार्लाभंगा
गुजरात – रंगपुर, लोचल, रोपड़ी, भगवतराव, सुरकोतवा आदि है।
महाराष्ट्र – दैमाबाद
पश्चिमी उत्तर प्रदेश – आक्रमण मीरपुर, मेरठ

निष्कर्ष – हडप्पा सभ्यता का विस्तार उत्तर में रूपठ से लेकर दक्षिण मं भगवराव तक, पूर्व में आलमगीरपुर से लेकर पश्चिम में सुरकागेन्डोर तक स्थित था।

इसमें छः मुख्य नगर थे और हडप्पा व मोहनजोदडो इस विशाल साम्राज्य की जुड़वा राजधानियां थी।

विशेष : अफगानिस्तान यद्यपि सिन्धु सभ्यता क्षेत्र में नहीं आता फिर भी यहां स्थल मिले हैं।

महानगर 6 महानगर

हड़प्पा, मोहनजोदडो, चान्हदडो, लोथल, बनवाली व सुरकोटडा

1. **हडप्पा :** प0 पंजाब में खुदाई में दुर्ग, रक्षा प्राचीर, 6–6 निवास गृह, चबूतरा, 6–6 अन्नागार आदि मिले हैं। समाधि आर–31 दुर्गा को माउंट आबू नाम दिया गया है।
2. **मोहनजोदडो :** सिन्धु, वृहत स्नानागार, अन्नागार, पुरोहितावास, महाविद्यालय, भवन अथवा सभाभवन। पुजारी का सिर व योगी की मूर्ति भवन निर्माण व सड़के।
3. **लोथल :** गुजरात – खम्भात की खाड़ी पर स्थित है। यहां से गोपीबाडे का संकेत मिलता है व चावन, धान
4. **कालीबंगा :** राजस्थाना–गंगानगर : मकान कच्चे ईंट के हड़प्पा व हड़प्पा पूर्व के संकेत, हलकुण्ड के निशान
5. **सुरकोतहा :** अश्व के संकेत
6. **बनवाली :** हिसार–बरियाल : चावल के हड़प्पा कालीन व हडप्पा पूर्व के संकेत।

————————————————————

हड़प्पा सभ्यता

सिन्धु सभ्यता के लोगो के जीवन में बाहय तथा आन्तरिक व्यापार का अतिशय महत्व था क्योंकि यह ग्रामीण संस्कृति न होकर नगरीय संस्कृति थी। व्यापार की पुष्टि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोचल में बडे–बडे अनाज कोठारो के पाये जाने से ही नहीं होती बल्कि एक बड़े भू–भाग में ढेर सारी सीलों, एक रूपि लिपि मानकीकृत माप तौलो के अस्तित्व से भी होता है।

विनिमय पद्धति : नाव व बैलगाड़ी व इक्के से –

हडप्पा व मोहनजोदडो व्यापार के प्रसिद्ध केन्द्र थे यहां के व्यापारी मुख्यतः जलीय मार्गों से व्यापार करते थे। वे मैसूर से सोना, राजस्थान व ब्लूचिस्तान से तांबा, अजमेर से सरिया, कश्मीर व काठियावाड़ से बहुमूल्य पत्थर मंगाते थे।

सैन्धव निवासियों का भारतीय प्रदेशों के अतिरिक्त अन्य देशों के साथ भी व्यापारिक एवं सांस्कृति सम्बन्ध था। मध्य एशिया, उत्तरी पूर्वी अफगानिस्तान, इरान, बहरीन द्वीप, मेसोपोटामियां, मिस्र, क्रीट आदि देशो के साथ सैंधव निवासियों का घनिष्ट सम्पर्क था।

सैंधव निवासियों ने उत्तरी अफगानिस्तान में एक वाणिज्य उपनिवेश स्थापित किया था जिसके सहारे उनका व्यापार मध्य एशिया के साथ चलता था।

इसी तरह सुमेर बेबीलोनिया, फारस तथा अफगानिस्तान से हड़प्पा की मुहरो से मिलती जुलती मुहरै प्राप्त हुई है। मोहनजोदड़ो की एक मुहर तथा एक ठीकर के उपर सुमेरियन ढंग नावों के चित्र अंकित है। जिससे विदित होता है कि सैंधव लोगों का व्यापार इन नगरों से होता था। 2300 के आसपास व उनके आगे के मेसोपोटामियाई लेखो में मेलुहा के साथ व्यापारिक सम्बन्धों की चर्चा है। मेलुहा का समीकरण सिन्धु प्रदेश से किया गया है। मेसोपोटामियाई लेखों में दो मध्यवर्ती व्यापार केन्द्रो का भी उल्लेख मिलता है। दिलमुन और मकन। बहरीन की खुदाई में कुछ मुहरें ऐसी मिली है जिस पर सैंधव लिपि में लेख अंकित है।

मेसोपोटामियां में प्रवेश के 32 प्रमुख बंदरगाह थे। यहां सैन्धव व्यापारी सोना, चांदी, तांबा, बहुमूल्य पत्थर, हाथी दांत, आभूषण, प्रशासन सामग्री लाते थे। लोथल की व्यापारिक गोदी का उल्लेख। मिस्र से हड़प्पा के प्रकार की गुरिया मिली है।

उत्पत्ति

सिन्धु सभ्यता कांस्यकालीन एवं नगरीय सभ्यता थी। इस सभ्यता के क्रमबद्ध विकास को दर्शाने में पुरातात्विक संस्कृति में विद्यमान थे। हड़प्पा की संस्कृति में

क्रमबद्धता का अभाव है। उत्पत्ति अत्यन्त विवादास्पद है। इसके दो मत हैं 1. स्वदेशी मत 2. विदेशी मत

विदेशी मत : पश्चिमी पुराविद जैसे गार्डन, चाईल्ड, जान मार्शल, डी0एच0 गार्डन, मार्डिमरहवीलर आदि के मतानुसार सिन्धु सभ्यता, मेसोपोटामिया, सभ्यता से उत्प्रेरित था। इन दोनों सभ्यताओं में एक ही परिवार की सामग्री जैसे कांस्य लघुपाषाण उपकरण, चाक निर्मित मृदभाण्ड, भवन निर्माण में ईंटो का प्रयोग, लेखन कला का ज्ञान आदि।

साक्ष्यों में समानता का उल्लेख करते हैं।

आलोचना : सुमेरिया–मेसोपोटामिया की सड़के, स्नानागार आदि सैंधव जैस नहीं है। उपकरणों में भी असमानता है।

लिपि : सैंधव चित्राक्षर, समेुरियन की लाक्षर 400 शब्द

मानव कंकाल : के अध्ययन के बाद कुछ विद्वानो ने सैंधव सभ्यता को विदेशी कहा है। लेकिन मानव कंकालों के अध्ययन के बाद यह सिद्ध नहीं हो सकता है कि वे विदेशी थे या स्वदेशी।

स्वदेशी मत : डब्लू0ए0 फेयर सर्विस, आस्चिन दम्पत्ति, अमलानन्द कोष, एस0आर0 राव आदि पुराविद इस संस्कृति को स्वदेशी मानते हुए इसी भू–भाग में रखे विकसित मानते हैं।

जहां विदेशी मत वाक्तो विद्ववानों की मान्यता थी कि यह संस्कृति आकस्मिक रूप से विकसित हुई वही स्वदेशी मत के पोषक।

पुराविद् – इसे ग्राम सभ्यता से शहरी सभ्यता में विकसित मानते हैं। अनेक उत्खन्नों के परिणामस्वरूप ग्राम सभ्यता के अवशेष उपलब्ध हुए हैं। ऐसे स्थलों में मुन्डीपाक, सहरेसोख्ता, आमरी, हडप्पा, कालीबंगा आदि से प्राकृहडप्पीय संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं। कालीबंगा से तो ग्राम व शहरी दोनों संस्कृतियों के अवशेष मिले है।

अमलानन्द घोष : शोर्था संस्कृति एवं कालीबंगा संस्कृति में सम्बन्ध में दर्शाते हुए एक ही स्थल पर विकसित मानते हुए एवं चटाई छाप युक्त मृदभाण्डो जो कि शोधी संस्कृति की विशेषता है ये पात्र हड़प्पा एवं कालीबंगा से भी प्राप्त हुए हैं।

अनेक पुरा सामग्रियां जो प्राक हडप्पीय काल में प्रचलित थी वे विकसित रूप में हड़प्पीय काल में प्राप्त होती हैं।

एस0आर0 राव के मतानुसार : गुजरात के हड़प्पीय सभ्यता के प्रसार के पूर्व कई सांस्कृतिक समूह विद्यमान थे। जैसा कि माकेसियस 'चमकीले लाल पात्र' एवं कृष्णलोहित मृभांण्ड की प्राप्ति से विदित होता है कि ये पात्र परम्पराएं लोथल के सबसे निचले स्तरों से प्राप्त होती है। अतः प्राकृहडप्पीय एवं हड़प्पीय संस्कृति में अंतराल नहीं दिखाई देता।

इसके अतिरिक्त आर0 चन्द्रा द्वारा प्राक हड़प्पीय एवं हड़प्पीय पुरा स्थलों का अध्ययन करने बाद जो दृश्य सामने आता है। उससे यह ज्ञात होता है कि ये संस्कृतियां पहले अविकसित थी और कालान्तर में इसमें धीरे–2 विकास होता है। जैसे–सिन्धु घाटी की उपत्ति कामो में ब्लूचिस्तान के पहाड़ी क्षेत्र में आमरी संस्कृति 3000 बी0सी0 उदय हुई। इसमें ब्लूचिस्तान के ग्राम्य संस्कृतियों के विभिन्न पहलुओं के लक्षण स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। इसी प्रकार कालीबंगा, कोटपीजी व बनवाली में प्राकृ हडप्पा व हडप्पा संस्कृति के अवशेष हैं। इन विद्वानों का मत है कि धीरे–2 ग्रामीण जन समुदाय ने नगरीय जीवन की सभी आवश्यकताएं एकत्रित कर रखी होगी जिनके फलस्वरूप इनका प्रवेश एकाएक शहरी या नगरी सभ्यता के रूप में हुआ।

आर0डी0 बनर्जी आदि विद्वान हड़प्पा संस्कृति को स्वदेशी मानते हुए द्रविडो को सैंधव का जनक मानते हैं। वै सैंधव सभ्यता के पात्र प्रकार, मनके व दक्षिण भारतीय पात्रों पर चित्रण एवं सैंधव लिपि में समानता के आधार पर भारतीय मूल निवासी द्रविडो द्वारा सैंधव सभ्यता की उत्पत्ति मानते हैं।

कुछ विद्वान वैदिक कार्यों को इस सभ्यता का जनक मानते हैं। तर्क संगत हैं।

हड़प्पा सभ्यता का विघटन

इस विषय पर अनेकानेक विद्वानों ने विभिन्न प्रकार के गत प्रतिपादित किये हैं। सम्भवतः इसके विघटन में विभिन्न विपदाओं का योगदान रहा होगा जिसके यह समाहित की ओर अग्रसर हुई।

बाहंय आक्रमण : इस मत का समर्थन गार्डन चाईल्ड, मैके, स्टुअर्ट गिट, डी0एच0 गार्डन आदि करते हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार आर्यों का आगमन भारत में 1200 बी0सी0 के आस–पास हुआ उन्होने हड़प्पीय संस्कृति को नष्ट किया एवं अपनी प्रभुसत्ता स्थापित किया। पिगट के अनुसार उत्तर पश्चिम की ओर से शहरी सभ्यता के विरूद्ध दुर्दान्त आर्यों द्वारा होने वाले आक्रमण एवं आग के परिणामस्वरूप इस संस्कृति का अन्त हुआ। जैसा कि रानाघुन्डई, नाल, ओव आदि पुरास्थलों पर बस्तियों के जलने, नये जन साधारण के आने एवं नवीन प्रकार के उपकरणों के प्रयोग से विदित होता है।

मोहनजोदडो की सतह से गई शव प्राप्त होते है जिनमें कुछ बच्चे भी है। शवाधानों का अलग क्षेत्र होते हुए भी वे शव अस्त व्यस्त अवस्था में बिना दफनाये हुए प्राप्त हुए हैं। इनमें से कुछ परतो पर धारदार हथियार द्वारा काटने के भी उदाहरण उपलब्ध होते हैं। यही नहीं मोहनजोदडो की अन्तिम अवस्था में असुरक्षा व अशान्ति के कुछ लक्षण दिखाई देते हैं। यहां की उपरी सतहों पर नयी किस्म की कुल्हाडियों, छूरे, पसलीदार एवं सपाट चूल वाली छूरियां मिली हैं।

पंजाब एवं हरियाणा के कई स्थलों पर लगभग 1200 बी0सी0 के उत्तर कालीन हड़प्पा मृदभाण्डों के साथ–2 धूसर, मृदभाण्ड और लाल भूरी पॉलिश वाले मृदभाण्ड पाये गये हैं जो आमतौर से वैदिक जनों से जुडे हैं।

————————————————————

आर्य अनार्य संघर्ष

आलोचना : ऋग्वेद में आर्यों के प्रिय देवता इन्द्र को पुरन्दर अर्थात किलों को तोडने वाला कहा गया है। फिर भी आर्य इतनी संख्या में नहीं आये कि सम्पूर्ण सभ्यता का विनाश कर सके। एस0आर0 राव आदि इस मत को नहीं मानते हैं।

2. प्रशासनिक शिथिलता : जान मार्शल आदि अनेक विद्वानों ने हडप्पा संस्कृति की अवनति के विषय में आतंरिक अव्यवस्था वं प्रशासनिक शिथिलता को कारण माना हैं। सम्भवतः प्रशासन में अव्यवस्था के कारण ही अन्तिम चरणों में हडप्पीय निवासियों के रहन सहन के स्तर में अवनति दिखती है। नवीन मकान की दीवारों में पुरानी ईटों का उपयोग एवं चौडी सड़को पर निवासियों का अतिक्रमण आदि से प्रशासनिक शिथिलता परिलक्षित होती है।

3. बाढ़ः जॉन मार्शल एवं ए मैके आदि ने सैंधव सभ्यता के विनाश का कारण सिन्धु नदीं की बाढ़ को माना है। जॉन मार्शल महोदय को उत्खन्न के समय बालू का जमाव प्राप्त हुआ था जो कि बाढ़ के फलस्वरूप ही जमा हुआ था। सम्भवतः बाढ़ के भय से ही मकान उंचे चबूतरों पर बनाया जाता था।

चान्हूदडो में भी बाढ़ के प्रमाण उपलब्ध हुए हैं। ए0के0 मैके के अनुसार सिन्धु नदीं में बाढ़ तक रही। चान्हुदड़ो के जन सामान्य पर कई बार अधिक समय तक रही। चान्हुदड़ो के जन सामान्य बाढ़ से बचने के लिये उंचे क्षेत्रों की ओर चले गये एवं उनकी विशिष्टयां समाप्त हो गयी। गुजरात के पुरा स्थल से भी बाढ़ के प्रमाण उपलब्ध होते हैं।

एस0आर0 राव के लोथल, भगवतराव, दौलतपुर, रंगपुर क्षेत्र से 2000 बी0सी0 से 1900 बी0सी0 में दो बार आई बाढ़ के अवशेष मिले हैं। आपके अनुसार सम्भवतः इसी काल में मोहनजोदडो एवं हड़प्पा में भी बाढ़ के प्रकोप प्रकट हुए जिसके कारण खेती नष्ट हो गयी। नहर बालू से भर गयी और इसके प्रकोपों के फलस्वरूप लोथल, हडप्पा व मोहनजोदडो आदि के निवासियों ने सतलज की घाटी, रोपड़ एवं सरस्वती घाटी में कालीबंगा आदि स्थलों को अपना निवास स्थल बनाया।

4. जलवायु परिवर्तनः– कुछ विद्वानों के अनुसार सिन्धु क्षेत्र में आज की अपेक्षा अधिक वर्षा होती थी। सारा क्षेत्र घने जंगलो से परिपूर्ण था लेकिन धीरे–2 जंगल कटते गये। वर्षा कम होती गयी, उपजाउ मिट्टी का कटाव हुआ जिससे कृषि पर व्यापक प्रभाव पडा। नदियां सूख गयी जिससे व्यापार ठप हो गया।

5. भू–तात्विक परिवर्तनः डा0 आर0एल0 टाईन्स ने प्राकृतिक उथल–पुथल को सिन्धु सभ्यता के पतन का कारण माना है। आपके मतानुसार अरब सागर के उत्तरी छोर पर प्राकृतिक उथल पुथल के कारण भूमि का स्तर उंचा हुआ जिससे की उस क्षेत्र में मिलने वाली नदियों के मार्ग में अवरोध हुआ एवं रेत जमा हो गयी। फलस्वरूप स्थान–2 परी झीलें बन गयी जिसके परिणामस्वरूप यातायात तथा व्यापार ठप हो गया। कृषि की अवनति हुई अतः सिन्धु घाटी का विघटन हुआ।

6. विदेशी व्यापार में गतिरोधः उपरोक्त समवेत कारणों से इस सम्भ्यता का विघटन हुआ न कि किसी एक कारण से।

सैन्धव सभ्यता की देन अथवा सातत्व व उत्तरजीविता

सिन्धु सभ्यता की खोज होने से पूर्व अधिकांश विद्वानों की धारणा थी कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के अभ्युन्नत तथ्य मुख्यतः आर्य भाषा भाषियों की देन हैं। लेकिन 1921 ई0 में सिन्धु सभ्यता के प्रकाश में आने के बाद अब यह सर्व सम्मति से स्वीकार किया जाता है कि भारतीय धर्म एवं संस्कृति के विनाश में आर्येत्तर तत्वों का उतना ही महत्वपूर्ण योगदान माना जा सकता है जितना कि आर्य परम्परा का। परवर्ती भारतीय सभ्यता के अधिकांश तत्वों का मूल हमें भारत की इस प्राचीनतम सभ्यता में दिखाई देता है। इसने हमारे इतिहास को एक सा तत्व प्रदान किया है तथा इसकी प्राचीनता को 3000–2500 ईसा पूर्व तक पहुंचा दिया है। सिन्धु सभ्यता की उत्तर जीविका तथा सातत्व का प्रभाव भारतीय सम्भ्यता के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा कलात्मक पक्षों में दृष्टिगत होता है।

1. सामाजिक : सामाजिक जीवन के क्षेत्र में सर्वप्रथम वर्ग व्यवस्था का बीज सैन्धव सभ्यता में प्राप्त होता है। मोहन जोदडो की खुदाई में प्राप्त अवशेषों के आधार पर विद्वानों ने सैन्धव समाज को चार वर्गों में बाटा है। विद्वान, योद्धा, व्यापारी, शिल्पकार व श्रमिक। इन्हें हम ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र वर्गो का पूरक कर सकते हैं।

2. आर्थिक : आर्थिक जीवन के क्षेत्र में हम पाते है। कि कृषि, पशुपालन, उद्योग धन्धों, व्यापार वाणिज्य आदि का संगठित रूप से प्रारम्भ सैन्धव वासियो ने किया जिनका विकास बाद की सभ्यताओं में हुआ। गेहूं, जौ, चावल, कपास आदि सैन्धव सभ्यता के प्रमुख धान्य थे जिनका उत्पादन आज तक होता है। इसी प्रकार प्रमुख पशु आज भी पाले जाते हैं।

सिन्धु निवासियों ने बाहय जगत से सम्पर्क स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया जो बाद की सदियो तक विकसित होता रहा।

भारतीय आहत मुद्राओ पर अंकित कुछ प्रतीक चिन्ह, सैन्धव लिपि के चिन्हों जैसे है। दूसरे सांचे में ढालकर तैयार की गयी मुद्रा अपने आकार प्रकार के लिए सैन्धव मुद्राओं नकल है।

हड़प्पा व मोहनजोदडो के बर्तनो, मिट्टी की वस्तुओं आदि पर अंकित कुछ चिन्ह, आकृतियां, प्रतीक आदि पंजाब से ईसा पूर्व की प्रारम्भिक सदियो की वस्तुओं पर अंकित मिलता है।

धर्म : सैन्धव सभ्यता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव हिन्दु धर्म तथा धार्मिक विश्वासो पर दिखाई देता है। मार्शन ने उचित ही सुझाया है कि हिन्दु धर्म के प्रमुख तत्वों का आदि रूप हमें सैन्धव धर्म में प्राप्त हो जाता है।

1. सैन्धव धर्म में मातृदेवी का प्रमुख स्थान था। इसी का विकसित रूप बाद में शाक्त धर्म में दिखाई देता है। सिन्धु घाटी के लोगो ने अपने पीछे मातृ पूजनकी जो परम्परा छोडी उसे भारतीय लोगो ने शक्ति देवी ग्राम देवता आदि के रूप में स्वीकार किया। वह आज तक सर्वोपरि देवी के रूप में विद्यमान है।
2. सैन्धव धर्म में जिस पुरूष देवता का उल्लेख मिलता है उसे ऐतिहासिक काल के पशुपति, शिव का रूप कहा जाा सकता है। यहीं से लिंग पूजा का उल्लेख मिलता है जो आज भी प्रचलित है। पद्रमासन की योग मुद्रा में बैठे हुए योगी की मूर्ति से बाढ़ में महात्मा बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण किया गया।

   कुछ प्राप्त मूर्तियों के पैरो के बीच थोड़ा अंतर है तथा भुजाएं शरीर के दोनों ओर समानान्तर है। इस मूर्ति का विकास बाद में जैनियो की कार्योत्सर्ग मुद्रा की मूर्तियों मे देखने का मिलता है।

   इस प्रकार शैव धर्म की तरह बौद्ध तथा जैन धर्मों का आदि रूप भी हमें सैन्धव सभ्यता में मिल जाता है।
3. सैन्धव सभ्यता में पीपल को पवित्र वृक्ष माना गया है। कालान्तर में हिन्दू तथा बौद्ध दोनो धर्मों में पीपल को पवित्र वृक्ष मानकर उसकी पूजा की जाने लगी। इसी वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध मानकर उसकी पूजा की जाने लगी। इसी वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध को सम्बोधित प्राप्त हुई थी। गीता में भगवान कृष्ण ने अपने को वृक्षों में अश्वस्थ बताया है। पुराणों में वर्णित है कि जो लोग अश्वस्थ पर जल चढ़ाते हैं स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।
4. सिन्धु सभ्यता मे विभिन्न पशुओं की पूजा की जाती थी। आज भी पशु पूजा प्रचलित है तथा विभिन्न पशुओं को देवताओं का वाहन माना जाता है। जैसे शिव नन्दी, गणेश–हाथी आदि। नाग पूजन भी हिन्दु धर्म में नागपंचमी के दिन की जाती है।
5. सैन्धव सभ्यता के समान आज भी जल को पवित्र माना जाता है तथा उसे विभिन्न देवताओं पर चढ़ाया जाता है।
6. सैन्धव निवासी स्वास्तिक, चक्र, स्तम्भ आदि को पवित्र मानकर उसकी पूजा करते थे हिन्दु धर्म में आज भी स्वास्तिक को पवित्र मांगलिक माना जाता है।
7. सैन्धव निवासियों की तरह मूर्ति पूजा आज भी प्रचलित है।

4. कला : धर्म के समान ही भारतीय कला के विभिन्न तत्वों का मूल रूप भी हमें सैंधव कला में दिखाई देता है। शायद भारतीयों को दुर्ग निर्माण तथा प्राचीरों के निर्माण की प्रेरेणा यहीं से मिली है। सुनियोजित ढंग से नगर बसाने का ज्ञान भी हमें हड़प्पा संस्कृति से ही प्राप्त होता है।

मौर्य कलाकारों ने स्तम्भ युक्त भवन बनाने की प्रेरेणा सम्भवतः सैन्धव सभ्यता से ही किया था। ऋग्वेद से पता चलता है कि आर्यो के घर/दुर्ग शत् भूजी अर्थात 100 खम्भों वाले थे जिनका इन्द्र ने भेदन किया था। यह सैन्धव दुर्गों का स्पष्ट संकेत है। लगता है कि इन्हीं के अनुकरण पर मौर्य कलाकारों ने चन्द्रगुप्त के खम्भों वाले राज्य का निर्माण किया था।

मूर्ति कला का प्रारम्भ सर्व प्रथम सिन्धु घाटी में ही किया गया। वहां के कलाकारों ने पाषाण, ताम्र, कांसा आदि की जिन कलात्मक मूर्तियों का निर्माण किया उनका व्यापक प्रभाव में बाद की हिन्दु कला पर पडा।

सिन्धु सभ्यता में नर्तकी की जो मूर्ति है। उसी के अनुकरण पर मथुरा की पाषाण पर पक्षी मूर्तियों का निर्माण हुआ प्रतीत होता है।

5. नगरीयकरण : सैन्धव सभ्यता की एक प्रमुख देन नगर जीवन के क्षेत्र में है। पूर्ण विकसित नगरीय जीवन का सूत्रपात इसी सभ्यता से हुआ। सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता इत्यादि के क्षेत्र में सैन्धव लोगो ने बाद की पीढियों का दिशा निर्देश किया।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैदिक आर्यों ने सैन्धव नगरों का विनाश कर उन्हें गर्त में मिला दिाय। किन्तु वे स्वंय उसकी समुन्नति संस्कृति के प्रभाव से अछूते नहीं रह सके। इस प्रकार आर्य तथा आर्येसर तत्वों के मिश्रण से ही भारतीय सभ्यता का सम्यक विकास हुआ।

सिन्धु सभ्यता की आधारभूत विशेषताएं

सिन्धु सभ्यता के विभिन्न स्थलों से प्राप्त मृग व प्रस्तर मूर्तियों, मुहरो, मुद्राओं कतिपय प्रकार के मृदभाण्डो तथा नगर अवशेषों के आधार पर सिन्धु सभ्यता की कतिपय आधार भूत विशेषताएं परिलक्षित होती हैं।

1. सिन्धु सभ्यता तृतीय कांस्य कला की सभ्यता है। इसमें कांस्यकाल की सर्वोत्कृष्ट विशेषताएं परिलक्षित होती हैं। हालांकि यह कांस्य कालीन सभ्यता अवश्य है फिर भी उसमें सबसे ज्यादा प्रयोग पत्थरों का ही किया गया है।
2. सिन्धु सभ्यता नगरीय तथा व्यापार प्रधान थी। इसके अन्तर्गत सिन्धु निवासियों ने भौतिक जीवन के क्षेत्र में आश्चर्य जनक उन्नति किया था। उन्हें नगरीय जीवन की अगणित सुविधाएं प्राप्त थी। विशाल नगरों, पक्के भवनों, सुव्यस्थित

सड़कों, नालियों और स्नानागारों के निर्माता, सुदृढ़ शासन पद्धति व नगर पालिका जैसा निकाय, विदेशी व्यापार के संगठन कर्ता, सिन्धु निवासियों की चतुर्दिक अभ्युान्नति के पीछे साधना व अश्रुभव की एक सुदीर्घ परम्परा थी।

प्राप्त मुहरों तथा मुद्राओं व अभिलेखों से ज्ञात होता है इनका विदेशों से व्यापक, पैमाने पर सम्पर्क था। मेसोपोटामिया, क्रीट तथा सुमेरिया सभ्यता के लोगो के साथ इसका व्यापार होता था।

3. सिन्धु सभ्यता शान्तिमूलक थी। उसके संस्थापको को युद्ध से अनुराग न था। यही कारण है कि सिन्धु प्रदेश के उत्खन्न में कचव, शिरसाव और ढाल नहीं मिले हैं, जो अन्य अश्त शस्त्र, धनुष बाण, भाला, कुल्हाडी आदि उपलब्ध हुई हैं। उनका प्रयोग बहुधा आत्म रक्षा अथवा आखेट के लिये ही किया जाता था।
4. यह सभ्यता समठिट वादिनी थी। सिन्धु प्रदेश के उत्खन्न में राज सामाग्री के स्थान पर सार्वजनिक सामग्री ही मिली है। विशाल सभा भवन और स्नानागारों के ध्वंसावशेष सिन्धु प्रदेश के सामूहिक जीवन के परिचायक है।
5. सिन्धु प्रदेश का आर्थिक जीवन औद्योगिक विशेषीकरण और स्थानीकरण पर अवलम्बित था। इस प्रणाली के अन्तर्गत अधिकांश व्यवसायी प्रायः एक ही व्यवसाय का अनुसरण करते थे। समान व्यवसाय के अनुसरण कर्ता प्रायः एक ही मुहल्ले में रहते थे।
6. सिन्धु सभ्यता के अन्तर्गत धर्म द्विदेवतामूलक, सिन्धु निवासी की श्रद्धा भक्ति के प्रमुख केन्द्र थे। दो देवता एक पुरूष के रूप में दूसरा नारीं के रूप मे। पुरूष व नारी चिरन्तन द्वन्द का यह मधुर दैवीकरण सिन्धु निवासी निशित कल्पना का प्रमाण हैं।
7. सिन्धु सभ्यता में लेख, गणना और माप भी प्रतिष्ठा हो चुकी थी। उन्होनें उसकी प्रगति को सत्वरता प्रदान की होगी।

सिन्धु सभ्यता व वैदिक सभ्यता में अंतर

मार्शल एवं अन्य कुछ विद्वानों ने सिन्धु सभ्यता और वैदिक सभ्यता के मध्य निम्नलिखित अंतर को स्पष्ट किया है :–

1. वैदिक संस्कृति ग्रामीण प्रधान थी जबकि सिन्धु सभ्यता नगरीय थी।
2. सिन्धु सभ्यता व्यापार प्रधान थी जबकि वैदिक सभ्यता कृषि प्रधान थी।
3. सिन्धु सभ्यता का सम्बन्ध विदेशों से जैसे मिस्र, क्रीट, मसोपोटामिया आदि की सभ्यता से था। जबकि आर्य सभ्यता का सम्पर्क विदेशों से नहीं था।
4. सिन्धु सभ्यता के लोग सोने चांदी, तांबे के अतिरिक्त लोहे से परिचित नहीं थे जबकि आर्य जन लोहे से परिचित थे।
5. आर्यों के जीवन में अश्व का काफी महत्व था जबकि सैन्धव इससे अपरिचित लगते हैं।

6. सिन्धु सभ्यता की नगर योजना तथा गृह निर्माण सुनियोजित था जबकि आर्यों के समय ऐसा कुछ भी नहीं था।
7. सिन्धु लोग कूबडदार बैल को ज्यादा महत्व प्रदान करते थे। जबकि आर्य गायों का विशेष महत्व देते थे।
8. सैन्धव सभ्यता के लोग शान्तिप्रिय थे। जबकि आर्य युद्ध प्रिय थे।
9. सिन्धु सभ्यता के स्थलों से नारी मूर्तियां प्रभूत संख्या में मिली है। जिससे अनुमान गाया जाता है कि सिन्धु सभ्यता के देवताओं में देवी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। जबकि आर्यों में पुरूष देवता अधिक महत्वपूर्ण रहे।
10. सिन्धु सभ्यता में लिंग पूजा का विशेष महत्व रहा जबकि आर्यों ने इसे अनार्यों की पूजा कहकर निन्दा की है। आर्यों ने लिंग पूजा को शिश्न देवाः कहकर निन्दा किया है।
11. सिन्धु सभ्यता में यशों तथा स्तुतियों को कोई महत्व नहीं था जबकि आर्यों के जीवन में राशों तथा स्तुतियों का महत्वपूर्ण स्थान था।
12. ऋग्वैदिक काल में न शिव पूजा का प्रचलन था और न ही मातृ देवी की पूजा का परन्तु इन दोनों की ही पूजा सिन्धु प्रदेशों में अति लोकप्रिय थी।
13. वैदिक जीवन में अग्नि का विशेष महत्व था। धार्मिक क्रियाओं के लिये प्रत्येक आर्य के घर में अग्निकुण्ड का होना आवश्यक समझा जाता था। परन्तु सिन्धु निवासियों के धार्मिक जीवन में अग्नि का कोई विशेष महत्व नहीं था।
14. ऋग्वेद में व्याघ्र का उल्लेख नहीं मिलता और हाथी का बहुत कम। जबकि अनेकानेक उपलब्ध मूर्तियों से स्पष्ट हेता है कि सिन्धु निवासी इन दोनों पशुओं से भली भांति परिचित थे।
15. मांसाहारी होते हुए भी आर्य मछली के प्रेमी न थे। परन्तु सिन्धु निवासियों की मछली एक प्रिय भोजन थी।

सिन्धु सभ्यता में धर्म तथा धार्मिक विश्वास

सिन्धु सभ्यता की 1921 में खोज होने से पूर्व तक अधिकांश विद्वानो की यह मान्यता थी कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को अभ्युन्नत तत्व मूलतः आर्य भाषा भाषियों की देन थे। सिन्धु सभ्यता के प्रकाश में आने के बाद अब यह प्रायः स्वीकार किया जाता है कि भारतीय धर्म तथा संस्कृति के विकास में आर्येत्तर तत्वों का उतना ही महत्वपूर्ण योगदान विकास माना जा सकता है। जितना कि आर्य परम्परा का। धर्म सैंधव सभ्यता का एक अत्यन्त विशिष्ट पक्ष था। जिसके उनके तत्व परवर्ती भारतीय सभ्यता में अंगीकृत हुए।

सैन्धव लिपि के पढ़े न जा सकने के कारण सैन्धव धर्म के विषय में लिखित साक्षयों का पूर्ण अभाव है। केवल पुरातात्विक उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर सैन्धव धर्म के स्वरूप के सम्बन्ध में अनुमान लगाया जा सकता है। हमें सैन्धव सभ्यता के विभिन्न पुरा स्थलों से प्राप्त होने वाली मिट्टी की मूर्तियों, पत्थर की मूर्तियों, मुहरों व मुद्राओं तथा मृदभाण्डो पर बनी आकृतियों और कतिपय विशिष्ट प्रकार के भवनों एवं स्मारकों के अध्ययन के आधार पर सैन्धव धर्म की जानकारी मिलती है। सैन्धव धार्मिक पक्ष में मातृदेवी की उपासना, पशुपत के रूप में देव उपासना, वृक्षपूजा, जल व वृक्ष पूजा लिंग व योनी पूजा आदि की प्रमुखता ज्ञात होती है।

2. मातृशक्ति या मातादेवी की पूजा : सरजॉन मार्शल के अनुसार माता देवी के सम्प्रदाय का सैन्धव संस्कृति में प्रमुख स्थान था। यहां पर पुरास्थलों से मातृ शक्ति की पूजा के विषय में जो साक्षय मिले हैं उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. मृण्मूर्तियां 2. मुहरों पर अंकित नारी

सिन्धु सभ्यता के सिन्ध तथा पंजाब के क्षेत्रों में अनेक मृण्मूर्तियां मिली हैं जिसे देवी कहा गया है। वह देवी करधनी, छार, कर्णफूल, कण्ठहार आदि पहने हुए हैं। कतिपय मूर्तियों को गोद में शिशु लिये हुए प्रदर्शित किया गया है।

1. मैके को कुछ ऐसी मृण्मूर्तियां मिली हैं। धूएं के चिन्ह दिखाई देते है। इन्होनें सम्भावना व्यक्त किया है कि देवी को प्रसन्न करने के लिए उसके सामने धूप आदि सृगन्धित द्रव्य जलाए जाते थे।

   हड़प्पा से प्राप्त बेलनाकार एवं लेखयुक्त एक मुहर में एक तरफ सिर के बल खड़ी स्त्री का एक चित्र है। जिसकी योनी से एक पौधा निकला रहा है। मुहर के दूसरी तरफ एक और शस्त्र लिये एक पुरूष खड़ा है। मार्शन ने सम्भावना व्यक्त किया है कि यह मानव बलि का दृश्य है। हो सकता है कि देवी का प्रसन्न करने के लिये मनुष्यों के बलि का विधान रहा हो।

   एक अन्य मुद्रा में पोपक की दो शाखाओ के बीच एक स्त्री का चित्र है। पेड के नीचे एक पुरूष एक बकरा लिये खड़ा है। इससे दो बाते ज्ञात होती है प्रथम बकरे की बलि मातृदेवी की उपासना से सम्बन्धित थी। द्वितीय पीपल के पेड़ की उपासना मातृदेवी की उपासना से सम्बद्ध रही हो।

2. **पुरूष देवता या पशुपति की उपासना :** अनेस्टि मैके को मोहनजोदडो से एक मुहर प्राप्त हुई है। इस मुहर पर एक पुरूष सिंहासन पर पद्मासन की योग मुद्रा में बैठा है। उसके सिर पर तीन सींगो की तरह एक आभूषण है उसके चारों और एक हाथी, एक गैंडा, एक बाघ और एक भैंसा है तथा पैरो के नीचे दो हीरण चित्रित हैं।

मार्शन ने इस देवता को रूद्र शिव से सम्बन्धित किया है जिसे त्रिमुख पशुपति, योगेश्वर अथवा महायोगी कहा गया है।

3. **योनि तथा लिंग पूजा** : हड़प्पा, मोहनजोदडो तथा लोथल आदि सैन्धव पुरा स्थलों से चमकीले पत्थरों पर निर्मित कतिपय ऐसे पुरावशेष प्राप्त हुए हैं जिनका समीकरण लिंग से किया गया है। खुदाई में सूच्चाकार तथा वर्तुलाकार लिंग मिे हैं। अनके छल्ले भी मिले हैं जिनसे योनी पूजा की सूचना मिलती है।
4. **पशु पक्षी व वृक्ष पूजा :** सैन्धव निवासी विविध प्रकार के पशुओं, पक्षियों, वृक्षों आदि की भी उपासना करते थे। पशुओं में गैंडा, बैल, चीता, हाथी, भैंसा तथा कूबडदार बैल मुख्य है। इनमें कूबडवाला सांड सर्वाधिक महत्व का था।

   जॉन मार्शल ने कालान्तर में विकसित होने वाली गणेश पूजा एवं वराहअवतार आदि को पशु पूजा का ही विकसित रूप माना है। सैन्धव सभ्यता से सम्बन्धित मुहरों एवं मृदभाण्डो इत्यादि पर पोपल, बबूल, नीम, खजूर, ताड़ महत्व का माना जाता था। जिसकी पूजा आज भी की जाती है। विद्वानों की धारणा है कि पीपल के वृक्ष में सैन्धव सभ्यता का मुख्य देवता निवास करता था। सिन्धु सभ्यता में फाख्ता को एक पवित्र पक्षी माना जाता था।
5. **मूर्ति पूजा :** सैन्धव नगरों की खुदाई में अभी तक किसी मन्दिर, समाधि तथा बेदी आदि के अवशेष नहीं मिले हैं। इस आधार पर कुछ विद्वानों का ऐसा सुझाव है कि देवी देवताओं की पूजा खुले स्थानों पर की जाती थी। धूप दीप, पुष्प, पशुबलि और सम्भवतः यदाकदा मानवा बलि द्वारा पूजा की जाती थी।
6. **जल पूजा :** मोहनजोदडो के उत्खन से एक विशाल स्नानकुण्ड मिला है। स्नानागार के उत्तर में दो पंक्तियों में छोटे–2 आठ स्नान कक्ष भी मिले हैं। जहां पर लोग पूजा करने के पहले स्थान करके अपने कपड़े बदलते रहे होगें। इस आधार पर जान मार्शल ने विचार व्यक्त किया है कि सैन्धव सभ्यता के लोग जल पूजा और सम्भवतः सरित पूजा किया करते थे।

7. सैन्धव स्वास्तिक व चक्र को भी पवित्र मानते थे। इसके अतिरिक्त नागपूजा का भी संकेत मिलता है। एक चित्रित मिट्टी के बर्तन पर किसी बैठे हुए देवता का चित्र बना हुआ है जिसके एक तरफ पुजारी तथा सिर के उपर नाग का चित्र है।

   अनेक ताबीजे भी प्राप्त होती है सम्भवतः प्रत्येक सैन्धव नागरिक मृदा को ताबीज के रूप में धारण करता था। ताबीजो पर तहर–तहर के चित्र खुदे हुए हैं। जिनका महत्व धार्मिक रहा होगा।

8. **अत्येंष्टि संस्कार :** सिन्धु सभ्यता की परलोक विषयक मान्यताओं के विषय में लिपि के अभाव में निश्चित जानकारी नहीं हैं। किन्तु इतना स्पष्ट है कि मृतक के अन्तिम संस्कार के प्रति वे पूर्ण सजग थे जिससे उनकी परलोक विषयक धारणा का भाव अवश्य होता है।

सिन्धु सभ्यता में अन्त्येष्टि संस्कार की तीन विधियां प्रचलित थी :–

1. पूर्ण समाधिकरण 2. आंशिक समाधिकरण 3. दाह संस्कार

कंकालो के साथ मिट्टी के बर्तन, आभूषण, उपकरण, दीप तथा दर्पण आदि अंत्येष्टि सामग्रीयां रखी हुई मिली हैं। उससे उनकी स्वर्ग विषयक धारण पुष्ट होती है।

———————————————————